ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(10): 1099-1102
www.allresearchjournal.com
Received: 26-07-2015
Accepted: 29-08-2015

डॉ. वीरेंद्र कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर, राजधानी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, भारत

Corresponding Author:
डॉ. वीरेंद्र कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर, राजधानी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, भारत

उग्रतारा: जड़ताओं को तोड़कर नई राह की प्रेरक

डॉ. वीरेंद्र कुमार

शोध के सार तत्त्व

नागार्जुन द्वारा रचित उपन्यास 'उग्रतारा 'गांव के जीवन में बसी जड़ताओं को तोड़कर नई सोच पैदा करने वाला एक प्रेरक उपन्यास है। कामेश्वर और उग्रतारा दोनों जीवन के यौवन काल के प्रारंभ में है विधुर और विधवा का विशेषण पा जाते हैं। दोनों में प्रेम हो जाता है। हमारे समाज की जड़ताएं ऐसी हैं कि उनके प्रेम को सही आयाम नहीं मिल पाता। उन्हें व्यवस्थाएं जेल में भेजकर ही संतुष्ट होती हैं लेकिन उनके जीवन में सपनों को आकार देने वाली भाभी उन्हें नई रोशनी और साहस देकर प्रेम के बंधन में बांध देती है विवाहिता और गर्भिणी नारी को स्वीकार कर कामेश्वर युवकों के सामने आदर्श की प्रस्तुति करता है। और कामेश्वर के प्रेम से जुड़ कर भी उग्रतारा भभीखन सिंह को उसके गर्भ का पालन -पोषण का आश्वासन देकर नई राह और नई सोच को गतिमान करती है।

उपन्यास में रतनपुर डिस्ट्रिक्ट जेल को सिपाहियों का निवास स्थान है यह क़्वार्टर सिपाहियों के लिए बने थे। एक फेरीवाला... ब्लाउज, कटपीस, गिलाफ बेचने की आवाज लगाता है- वास्तव में यह नौजवान मढ़िया सुंदरपुर का रहने वाला कामेश्वर सिंह है जिसे वह उगनी दिल दे बैठी है। कपड़े बेचने का काम वह उगनी तक पहुंचने के लिए करता है। वह उगनी को किसी भी हालत में छोड़ नहीं सकता।

कामेश्वर को नौ महीने की सजा हुई थी। वहां से छूटकर आ जाता है, उगनी को पाने के लिए उसने कपड़े बेचने का धंधा शुरू कर दिया था। उपन्यास में उगनी को भी जेल में मजबूरी ने भभीखन सिंह से बांध दिया।

उपन्यास में कामेश्वर सोचता है- " कितने मुसीबत झेलनी पड़ी है इसे। क्या बुरा किया? उस मुछंदर अधेड़ से शादी करके यहां बैठ गई, ठीक ही तो किया। और मैं जो कुछ करने वाला हूं, वह ठीक नहीं होगा क्या? मैं उगनी को इस नरक से बाहर निकाल ले जाऊंगा। यह चेहरा सिर्फ उसी तरह खिला-खिला रहेगा पूरे चांद पर राहु की रत्ती भर भी परछाई मुझे चैन नहीं लेने देगी..... ।" [1]

सच्चे प्रेमी की तरह जेल से छूटकर कामेश्वर यह संकल्प लेता है। उगनी को भी अपराध बोध है, उससे कुछ गलत हो गया है " अब वह भभीखन सिंह की घरवाली थी। लाइन के क़्वार्टर में रहने वाले छोटी उम्र के सिपाही उसके देवर थे।

ट्रंक पर लापरवाही से रखे हुए ऊनी मौजे उगनी के अंदर विद्रोह नहीं जगाते आते थे।" [2]

वह विवाहित जीवन को मजबूरी से ढो रही है। मजबूरियां क्या नहीं करा देती मनुष्य से। लेकिन सच्चे मार्ग के पथिक नहीं झुकते।

जेल से बाहर आकर कामेश्वर सिंह कहता है- " तू तो बदल गई है। कितनी हंसती थी पहले। जेल के अंदर में नहीं रह पाता अगर सूनी रातों में तेरी वह खिलखिलाहट सुनाई नहीं पड़ती।" [3]

उगनी को यह अपराध लगता है कि उसे 50 वर्ष के भभीखन से शादी कर ली। उसकी सारी प्रसन्नता का अपरहण हो जाता है।

कामेश्वर उगनी को प्यार करता है " तुझे मैं लेने ही आया हूं। कोई भी बहाना नहीं चलेगा। हां, दो -एक रोज की छुट्टी मिल जाएगी।" [4]

दूसरी तरफ भभीखन पचास वर्ष का है। उसने उगनी पर उपकार किया है ऐसा भभीखन सिंह सोचता है " आज उगनी भभीखन सिंह की निगाहों में खानदानी राजपूत की जनाना है। उस दिन वह देहात की आवारा छोकरी थी। उस आवारा छोकरी को फिर से इज्जतदार घराने की मर्यादा देकर कितना बड़ा काम किया है भभीखन सिंह ने।" [5]

लेकिन भभीखन कभी उगनी के दिल की नहीं सुन सका।

वह सिपाही भभीखन जनाना वार्ड में जाकर महिला कैदियों में से उगनी के प्रति आकर्षित होता है - "वह अपने पति की हत्या करके आई थी... पतली- छरहरी सांवली। बड़ी बड़ी आंखें। नुकीली नाक। जिसका ऐसा लुभावना चेहरा होगा, कैसे वह किसी मर्द के प्राण लेगी...।" [6]

यही कैदी पच्चीस - छब्बीस की उगनी भभीखन को अच्छी लगने लगती है भभीखन को महिला वार्डन के बीमार पड़ने पर महिला कैदियों के वार्ड में ड्यूटी देनी पड़ी तो उसने जान लिया "यह जो नई छोकरी आई है उसका आगे- पीछे कोई नहीं है। बिल्कुल उड़ाऊ माल है, जिसकी डाल में घोंसला होगा उसी पेड़ के हवाले कर देगी अपने को..... ।" [7]

उड़ाऊ माल समझकर भभीखन उसे अपने बनाने की कोशिश में लग जाता है और उसके बाद भभीखन के मन में उसके प्रति आकर्षण गहरा हो गया "तभी से मेरे मन में आशा का अंकुर उगा । " [8]

भभीखन को जनाना वार्ड की एक कैदी ने बतलाया था " वह भाग के आई है। जिसके साथ भागी थी उसकी नौ महीने की सजा देकर गंगा के उस पार किसी जेल में भेज दिया गया है।" [9]

सिपाही भभीखन उगनी के बारे में जानकारी ग्रहण करता है। कामेश्वर की शादी बीस वर्ष की आयु में हुई थी और छः महीने बाद ही बहू का देहांत हो गया था। बेचारी टाइफाइड का शिकार हुई और कामेश्वर का हृदय रिक्त रह जाता है।

कामेश्वर का मन पढ़ाई से हट गया 'पढ़ाई छूट जाने से उन दिनों मन यूं ही उचटा - उचटा रहता था। पत्नी की मृत्यु ने उसे उचाट को और गहरा बना दिया।" [10]

कामेश्वर ने सोच लिया - " मैट्रिक में फेल होने के बाद उसने तय किया कि खेत- किसानी में भिड़ जाएगा। मैट्रिक में क्या रखा है? बाप दादों के खेत हैं डेढ़ सौ बीघे। आम के बाग हैं। साखू, महुआ, शीशम, जामुन, बड़हल, तून के जंगल है।बड़े-बड़े दो पोखर हैं, जिनमें हर साल हजारों की मछलियां निकलती है।" [11] और उसके बाद उसके रिक्त हृदय में बाल विधवा उगनी समा गई।उपन्यासकार ने लिखा है कि बाल विधवा उगनी कामेश्वर की कल्पना में जमकर पूरी तरह बैठ गई थी " किस प्रकार उस असहाय युवती का मुख क्रंदन कामेश्वर के मन को मथने लगा और किस प्रकार और संकल्प उसे लेना पड़ा।" [12]

कामेश्वर उग्रतारा के प्रति आकर्षित हुआ जाता था " उग्रतारा असल नाम था, मगर उस नाम से कभी किसी ने उस को पुकारा नहीं... ..... सुंदरपुर मढ़ीया में एक नहीं पच्चीस उगनिया थी। नौजवान आपस में उनकी चर्चा करते थे... उगनी को अच्छा दूल्हा मिला था, नौजवानों को बड़ी खुशी हुई थी। स्टिमर दुर्घटना में उगनी के दूल्हे का देहांत हुआ... नर्मदेश्वर की भाभी ने उगनी के भविष्य के बारे में विधायक सुझाव दिए थे।कैसे संकल्प का एक नन्हा सा बीज कामेश्वर के हृदय में तभी पड़ा था ।" [13]

उपन्यास में उपन्यासकार ने बड़े कौशल से नर्मदेश्वरकी भाभी का चरित्र गढ़ा है। नर्मदेश्वर की भाभी ने कामेश्वर से अकेले में पूछ लिया- "कब तक अकेले रहिएगा बाबू साहेब शादी नहीं कीजिएगा अभी तो खैर दस वर्ष जवानी की उमंग में दूसरी शादी न करने का हठ भी निभा लीजिएगा, आगे चलकर आपके साथ भी वह मुहावरा जुड़ेगा कि गुड़ खाकर गुलगुले से परहेज।" [14]

प्रगतिशील नर्मदेश्वर की भाभी ने कहा " कि तुम विधुर हो और वह विधवा, दोनों एक दूसरे को अपना लो। आखिर तक वह पशोपेश में रहे। कामेश्वर का दिल थाहती रही, उसके साहस का अंदाज लेती रही।" [15]

नर्मदेश्वर की भाभी प्रगतिशील दृष्टि से संपन्न है और उगनी की शिक्षा भी ध्यान देती है " नर्मदेश्वर की भाभी को जब मालूम हुआ कि लड़की ककहरा भी मुश्किल से पहचानती है तो उसे भारी परिताप हुआ। उगनी की मां से अनुमति लेकर उसने उसके लिए वर्णमाला की रंगीन चार्ट मंगवाई।" [16]

लेखक नारी शिक्षा की बात उठाता है- यही उगनी ज्यादा नहीं पढ़ -लिख सकी । दस लाइन का खत लिखने में उसे घंटा लगता था। उगनी ने विवश होकर शादी की थी, भभीखन से

शादी के बारे में सोचती है " यह भी बलात्कार ही था। ठीक है, भभीखन सिंह ने वैदिक विधियों से शादी की थी। ठीक है, आधे घंटे तक अग्नि में आहुतियां डाली गई थी, ठीक है, हवन के धुएँ में बहुतों की आंखें आनंद के आंसुओं से गीली कर दी थीं । ठीक है, तोला भर सिंदूर मांग के बीचों बीच कई दिनों तक जमा रहा। सब कुछ ठीक है। लेकिन स्त्री-पुरुष के बीच उम्र का इतना बड़ा फैसला किस तरह मखौल उड़ा रहा था विवाह के संस्कारों का।" [17]

उपन्यासकार युवकों के माध्यम से सामाजिक जड़ रूढ़ियों पर प्रहार करता है। उगनी को लगता है कि भाभी सिरहाने खड़ी है, कह रही है " कामेश्वर तुम्हें लेने आया है, तुम जरूर उसके साथ चली जाओ। वह तुम्हें भी स्वीकार करेगा और तुम्हारे शिशु को भी स्वीकार करेगा। कामेश्वर नए भारत का नया युवक है।" [18]

सच्चे प्रेम में पगी उगनी सोचती है "वह पागल नहीं होगी। कामेश्वर के बारे में सोचते -सोचते दस -पाँच रात क्या, उगनी सारा जीवन गुजार देगी तो भी पागल नहीं होगी... ..... हां भभीखन सिंह के बच्चों की मां बनने के बाद पागल होने से उसे कोई नहीं रोक सकेगा।" [19]

भभीखन सामाजिक रिश्ता वाला मात्र घर वाला ही था। भभीखन के रूप में वह यही पाती है " उगनी को घर वाला तो जरूर मिल रहा था, पति नहीं मिल रहा था।" [20]

यही भभीखन कभी-कभी उगनी पर संदेह करने लगता है " वह उसे कभी- कभी संदेह की निगाहों से देखते हैं। कभी-कभी यह सोच कर अपने आप को आश्वासन दे लेते हैं कि बच्चा पैदा होगा तो मन की गांठें आप ही आप ढीली होती जाएंगी।" [21]

भभीखन रूढ़िवादी सिपाही भी है जब तिवारी जी का दामाद ससुराल आता है तो उगनी उसके सामने नहीं आती। हालांकि तिवारी की बेटी गीता उसकी सहेली है " तिवारी जी की बीवी ने काफी जोर डालकर मगर, भभीखन सिंह की घरवाली उसके दामाद के सामने नहीं हुई। भभीखन सिंह को अपनी बीवी से यही उम्मीद थी।" [22]

ऐसी रूढ़िवादी सोच वाले भभीखन की घरवाली बनकर कैदी की भांति उगनी को रहना पड़ता है।

पड़ोस में तिवारी जी की बेटी गीता से उसका सहेली जैसा प्यार होता है। गीता सोचती रही भभीखन के बारे में " गंगा यमुना चाहे मिलकर जोर लगाएं तो भी चाचा की जवानी वापस नहीं लौटा सकती वे। क्या जरूरत थी शादी की?" [23]

कामेश्वर जेल के पास की ही धर्मशाला में दिन बिताता है और रात भी वही गुजरती है ताकि उगनी अर्थात अपने प्रेम को पा सके।

वहीं जेल के पास है मंदिर के पुजारी का कामेश्वर से स्नेह बढ़ता है। कामेश्वर सोचता है " यह लोग जिंदगी भर पारिवारिक स्नेह के लिए तरसते रहते हैं। बुढ़ापे में इनका आत्माराम प्यासा रहता है और छोटी उम्र के छोकरों को देखते हैं तो प्यार के मारे गीले हो उठते हैं। बेटा- बेटा, राजा- राजा कहेंगे, प्रसाद के नाम पर मेवा-मिठाई खिलाएंगे और पास बैठा कर देर तक देखा करेंगे,विभोर होकर।" [24]

उपन्यासकार का संकेत है की अतृप्त हृदय पुजारी जैसों को युवकों के निकट लाकर एक संतुष्टि देता है। उपन्यासकार वास्तव में मानव मन की स्वाभाविक भूख को रेखांकित कर रहा है।

मठिया में पुजारी बाबा के यहां कामेश्वर धर्मशाला से आकर उगनी से मिलते हैं। तिवारी की बेटी उगनी को चाची कहती है, उससे उगनी को सहानुभूति होती है। गीता सबको कहती है कि कामेश्वर चाची के मामा का लड़का है जो कपड़े का धंधा करता है लेकिन पुजारी बाबा असलियत जान जाते हैं पर विवेक दिल कामेश्वर से स्नेह रखते हैं और स्नेह की भावना की कद्र करते हैं । इन्हीं के पास मठिया में कामेश्वर और उगनी की बातचीत भी हो पाती है...

" बगीची में बातचीत करके उठते - उठते कामेश्वर ने पूछा-
'सिपाही जी नहीं आते हैं यहां ? '
'सनीचर को। 'उगनी बोली
'और तुम? 'कामेश्वर मुस्कुराया।

उगनी ने कहा "अक्सर मंगलवार की शाम को आती रही हूं।"25

तिवारी की बेटी गीता उगनी चाची की पीड़ा के बारे में सोचा करती है-

" पेट के अंदर 4 महीने का जीव पल रहा है अब कहां भागेगी बेचारी? 22-23 वर्ष की लड़की 50 वर्ष के मुछंदर सिपाही की घरवाली बनकर रहने को किस प्रकार तैयार हुई? बेचारी के सामने और कोई रास्ता ही नहीं रहा होगा?" [26]

उपन्यास में समय करवट बदलता है और उगनी का सहारा बनकर भाभी खड़ी हो जाती हैं । कामेश्वर और उग्रतारा की प्रेम की पवित्र भावना को समझते हुए भाभी उन्हें एक होने के लिए प्रेरित करती हैं "सिंदूर भरी कटोरी सामने रखकर भाभी बोली "आज यह विधि पूरी होगी। मैं पुरोहित हूं। लो, चुटकी में सिंदूर लो और उग्रतारा की सीथ भर दो बाबू।" [27]

और कामेश्वर ने भाभी की बात मान ली "कामेश्वर ने चुपचाप

भाभी की आज्ञा का पालन किया"। [28]

उगनी और कामेश्वर दोनों ने उठकर प्रणाम किया। भाभी दो अंगूठियां निकाल लायीं " बोली - एक दूसरे को पहना दो।" [29]

उपन्यास में उगनी सोचती है "आज एक पुरुष ने गर्भिणी नारी के सीमंत में सिंदूर भरा था। धोखे में ? नहीं जानबूझकर उसके होशो हवास दुरुस्त थे, विवेक सजग था, आवेश या आवेग चेतना पर हावी नहीं था। सभी बातें उसे मालूम थी कामेश्वर को, फिर भी उसने उगनी की मांग में सिंदूर भरा है।" [30]

नागार्जुन की यह प्रगतिवादी दृष्टि उपन्यास को महत्त्वपूर्ण बना देती है। उगनी सिपाही जी को पत्र लिखती है -अब बनाऊंगी

"आदरणीय सिपाही जी,
मेरे अपराधों को आप कभी माफ नहीं करेंगे यह मैं अच्छी तरह जानती हूं। दूर चली आई हूं..... आपकी संतान समय पर बाहर आएगी। आषाढ़ में उसका जन्म जरूर होगा, रत्ती भर भी चिंता ना करें। मैं उसको कहीं फेंक नहीं आऊंगी। पाल पोस कर उसे सयाना बनाऊंगी..... मैंने अपना सब कुछ जिसे सौंप दिया था, उसी के साथ गांव से निकली थी, और जिसके साथ गांव से निकली थी वही मुझे आपके क्वार्टर से निकाल लाया है, उस आदमी का दिल बहुत बड़ा है। पराए गर्भ को ढोने वाली अपनी प्रेमिका को फिर से बिना किसी हिचक के उसने स्वीकार कर लिया है, उसने मुझसे शादी कर ली है।" [31]
यह है नागार्जुन की प्रगतिशील दृष्टि जो उग्रतारा के माध्यम से प्रेम को सीखचों से बाहर निकालकर सामाजिक जड़ताओं को तोड़ती हुई उग्रतारा के रूप में एक नई राह नारी जगत को प्रदान करती है।

संदर्भ- ग्रंथ- सूची

उग्रतारा - नागार्जुन- राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली -------पहला संस्करण 1987

1. उग्रतारा - नागार्जुन--------- पृ. 8
2. ----------वही --------- पृ. 8
3. ----------वही ---------- पृ. 8
4. ----------वही ---------- पृ. 9
5. ----------वही --------- पृ. 10
6. ----------वही ---------- पृ. 21
7. ----------वही ---------- पृ. 23
8. ----------वही ---------- पृ. 23
9. ----------वही ---------- पृ. 22
10. ----------वही ---------- पृ. 27
11. ----------वही ---------- - पृ. 28
12. ----------वही ---------- - पृ. 29
13. ----------वही ---------- पृ. 30
14. ----------वही ---------- पृ. 31
15. ----------वही ---------- पृ. 31
16. ----------वही ---------- पृ. 31
17. ----------वही ---------- पृ. 35
18. ----------वही ----------पृ. 36
19. ----------वही ---------- पृ. 37
20. ----------वही ---------- पृ. 40
21. ----------वही ---------- पृ. 43
22. ----------वही ---------- पृ. 47
23. ----------वही ---------- पृ. 51
24. ----------वही ---------- पृ. 53
25. ----------वही ---------- पृ. 58
26. ----------वही ---------- पृ. 63
27. ----------वही ---------- पृ. 80
28. ----------वही ---------- पृ. 80
29. ----------वही ---------- पृ. 81
30. ----------वही ---------- पृ. 81
31. ----------वही ---------- पृ. 103